पाठ–39 पांडवों का धृतराष्ट्र

कौरवों पर विजय प्राप्ति के बाद सभी राज्यों पर एकछत्र अधिकार होने के बाद अपना कर्तव्य समझकर उन्होनें राजकाज संभाल लिया।

धृतराष्ट्र का पांडवों के प्रति स्नेह और पांडवों का धृतराष्ट्र के प्रति स्नेह अटूट था।

पांडव पक्ष में अकेला भीमसेन ही ऐसा था जो बीते हुए दिनों की याद को भुला नहीं पाया था इस कारण मर्मभेदी बातें कह देता था जिससे धृतराष्ट्र और गांधारी को दु:ख होता था।

धृतराष्ट्र का मन अब राजसुख में नहीं लग रहा था इसलिए एक दिन उसने वनगमन की इच्छा प्रकट की।

वंश परंपरा के अनुसार वे तीनों वल्कल वस्त्र धारण कर वन की ओर गए।

धृतराष्ट्र,गांधारी और कुंती ने तीन वर्ष तक वन में तपस्वियों का–सा जीवन व्यतीत किया।